

अल वज़ीफतुल करीमा

मामुलात व इफादात

आला हज़रत अज़ीमुल बरकत मौलाना
अश्शाह अहमद रज़ा खान बरेलवी
कुद्दस्ल्ला सिर्रहुल अज़िज़

तहरीके फिक्रे रेज़ा
१६७, डिमटिमकर रोड़, नागपाड़ा, मुंबई-८.

Scanned by CamScanner

ZEBNEWS.IN

PRESENTED BY

NAUSHAD AHMAD "ZEB" RAZVI

ALLAHABAD

आशिकाने रसूले मकबूल صلّی اللہ علیہ و سلّم

के लिए एक तोहफ़ा

अल वज़ीफतुल करीमा

मामुलात व इफादात

आला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मौलाना अश्शाह

अहमद रज़ा खान बरेलवी

कुद्दसल्ला सिर्रहुल अज़ीज़

तहरीके फ़िक्रे रेज़ा

१६७, डिमटिमकर रोड़, नागपाड़ा, मुंबइ - ८.

Phone : 377 3541

Scanned by CamScanner

सिलसिलए इशाअत नं : ७

जुमला हुक़ूक बहक़ नाशिर महफुज़ हैं।

किताब : अल वज़ीफतुल करीमा

मुरत्तिब : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इशाअत : पहली बार, १४२० हिजरी १९९९ ई.

तादाद : ५००० (पांच हज़ार)

कमपोज़िंग : मुहम्मद इसहाक बरकाती

तसीह : मुहम्मद अली रज़ा क़ादरी

Scanned by CamScanner

بسم الله الرحمن الرحيم

तारीफ उस रब्बे करीम के लिए जिस ने हमें मौलाए आलम वाली-ए-आज़म मुहम्मद रसुलुल्लाह صلّى الله تعالىٰ عليه وعلىٰ آله و سلّم के बन्दगाने बारगाहे आलम पनाह में किया। हमारे हाथ में हुज़ुर पुरनुर सैयिदुना गौसुल आज़म रदीयल्लाहो तआला अनहो का दामने करम दीया। अपने अवलिया हमारे मशाइख़े सिलसिला ख़ुसुसन हमारे आक़ा व मौला सैयिदुना आला हज़रत किबला रदीयल्लाहो तआला अनहू का सायाए रहमत हम पर दराज़ किया। जिन्हों ने हम तक पहुँचाया, कि तुम्हारा हया वाला रब्बे करीम हया फ़रमाता है कि बंदा उसके आगे हाथ फैलाए और वह खाली हाथ फेर दे। हमें खुद दुआ का हुकम दिया और अपने करम से दुआ क़बुल करने को लाज़िम फरमाया

Scanned by CamScanner

فَعَلَيْكُمْ بِالدُّعَاءِ فَإِنَّ الدُّعَاءَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ بَعْدَ اَنْ يُبْرَمَ

बारगाहे करम सय्यदे अकरम صلى الله عليه وعلىٰ آله و اصحابه وسلم से हूज़ूर पुरनुर सय्यिदूना आला हज़रत क़िबला रदीयल्लाहो तआला अनहू के हाथों जो मुबारक दुआएँ हमें पहुँची और अज़कार व अशगाल क़िमती मोतीयों की तरह खान्दाने आलिया में छिपे थे। बरादराने अहले सुन्नत व ख़्वाजा ताशाने क़ादरियत रज़वियत के लिए शाए कर रहे हैं और दावे से कहते हैं कि इनका अमल करने वाला दीन व दुनिया की बरकतों से मालामाल होगा। हर बला व आफ़ात से महफुज़ रहेगा। मौला तआला इन की बरकत से तमाम अहले सुन्नत को फ़ायदा पहुँचाए। आमीन। आमीन।

सुबह व शाम दोनों वक्त

आधी रात ढले से सुरज की किरन चमकने तक

Scanned by CamScanner

सुबह है इस बीच में जिस वक्त इन दुआवों को पढ़ लेगा सुबह का पढ़ना होगया। युँही दोपहर ढलने से सुरज के छिपने तक शाम है।

१. سُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَ بِحَمۡدِهٖ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمۡ يَشَالَمۡ يَكُنۡ اَعۡلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عِلۡمًا.

एक एक बार

२. आयतुल कुर्सी एक एक बार और इस्के बाद:

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ....حٰمٓ ٥ تَنۡزِيۡلُ الۡكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ٥ غَافِرِ الذَّنۡبِ وَ قَابِلِ التَّوۡبِ شَدِيۡدِ الۡعِقَابِ ذِى الطَّوۡلِ ج لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ٥ (सूरह ग़ाफ़िर आयत-१)

एक एक बार।

३. तिनों क़ूल तीन तीन बार। इन तीनों नंबरों का

Scanned by CamScanner

फायदा हर बला से महफ़ूज़ी है। सुबह पढ़े तो शाम तक और शाम पढ़े तो सुबह तक।

بِسْمِ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَايَسُوْقُ الْخَيْرَ اِلَّااللّٰهُ ٤ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَايَصْرِفُ السُّوْٓءَ اِلَّااللّٰهُ مَاشَآءَ اللّٰهُ مَا كَانَ مِنْ نِّعْمَةٍفَمِنَ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ

तीन तीन बार।

इस का फायदा **सात** चीज़ो से पनाह है।

१. जलना २. डूबना ३. चोरी ४. साँप ५. बिच्छु ६. शैतान और ७. सुलतान। सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक।

٥. اَعُوْذُ بِكَلِمٰتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ ط

तीन तीन बार। साँप-बिच्छू वगैरह मुज़ियात (तकलीफ देने वाले) से पनाह हो।

٦. بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَايَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَالسَّمِيْعُ الْعَلِيْم ٥

Scanned by CamScanner

तीन तीन बार। ज़हर व हरज़ (कैद) से अमान है।

٧. رَضِیۡتُ بِاللّٰہِ رَبًّاوَّبِالْاِ سْلاَمِ د ِیۡنًاوَّبِسَیِّد ِنَا

وَمَوْلٰنَامُحَمَّدٍصَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ نَبِیًّاوَّرَسُوْلاً

तीन तीन बार

अल्लाह अज़-व-जल के करम पर हक है कि क्यामत के रोज़ उसे राज़ी करे।

٨. حَسۡبِیَ اللّٰہُ لآ اِلٰہَ اِلاَّ ھُوَ عَلَیۡہِ تَوَکَّلۡتُ وَھُوَرَبُّ

الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ (सूरए तौबा आखरी आयत)

दस दस बार। हर बला व मकर से म्हफुज़ी। हदीस में सात बार फरमाया। हुज़ुर सैयदुना गौसुल आज़म रदीयल्लाहो तआला अनहो से दस बार आया। फक़ीर का इसी पर अमल है। इसे अल्लाह के शुक्र से तमाम मक़ासिद के लिए काफी पाया।

٩. فَسُبۡحٰنَ اللّٰہِ حِیۡنَ تُمۡسُوۡنَ وَحِیۡنَ تُصۡبِحُوۡنَ وَلَہُ

الۡحَمۡدُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَعَشِیًّا وَّحِیۡنَ

Scanned by CamScanner

تُظهِرُوْنَ ○ يُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَمَوْتِهَا وَ كَذَالِكَ
تُخْرَجُوْنَ ○ ط एक एक बार।

जिस किसी दिन सब वज़ाइफ रह जाए तो यह तनहा उन सब की जगह काफी है। इसके अलावा रात दिन के हर नुकसान की तलाफी है।

١٠. اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا

(सूरए मोमिनुन आयत-११५) खतमे सूरह तक एक एक बार। शैतान व जिन व आफात से म्हफुज़ी।

١١. اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

तीन बार।

फिर (هُوَاللّٰهُ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ○ ط) सुरह हशर अयत-२२) सुरह हशर की आखरी तीन आयतें। एक बार. सुबह पढ़े तो शाम तक सत्तर हज़ार फरिशते इसके लिए इसतगफार करें और दिन मे मरे तो

Scanned by CamScanner

शहीद हो और शाम को पढ़े तो सुबह तक यही हुक्म है।

१२. اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُه‘ وَ نَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُه‘

तीन तीन बार। खातमा इमान पर हो।

१३. بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَوُلْدِىْ وَ اَهْلِىْ وَ مَالِىْ

तीन तीन बार। दीन, इमान, जान, माल, बच्चे सब म्हफुज़ रहें।

१४. اَللّٰهُمَّ مَآ اَصْبَحَ لِىْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

एक एक बार।

सुबह को कहे तो दिन भर नेअमतों का शुक्र अदा किया और शाम को कहे तो शब भर की। शाम को اَصْبَحَ की जगह اَمْسٰى कहें। फक़ीर इस के बाद

Scanned by CamScanner

यह बढ़ाता है।

لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّی كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

بِسْمِ اللّٰهِ جَلِيْلِ الشَّا نِ ج عَظِيْمِ الْبُرْهَانِ. ٩٥

شَدِيْدِ السُّلْطَانِ ج مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ

الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

(सुरए अंबिया आयत-२२) एक एक बार। शैतान और उसके लशकरों से म्हफुज़ रहे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ وَ اُشْهِدُ حَمَلَةَ ٩٦.

عَرْشِكَ وَمَلٰئِكَتَكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ اِنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

اِلاَّ اَنْتَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ

وَرَسُوْلُكَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ۔

चार चार बार। हर बार बदन का चौथा हिस्सा दोज़ख से आज़ाद हो। शाम को اَصْبَحْتُ की जगह اَمْسَيْتُ कहे।

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا دَآئِماً مَّعَ دَوَامِكَ وَ ٩٧.

Scanned by CamScanner

لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا خَالِدًا مَّعَ خُلُوْدِكَ وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا

لَّا مُنْتَهٰى لَهُ دُوْنَ مَشِيَّتِكَ وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا عِنْدَ كُلِّ

طُرْفَةِ عَيْنٍ وَّ تَنَفُّسِ كُلِّ نَفْسٍ

एक एक बार। गोया उसने उस दिन रात पुरी इबादत का हक़ अदा कीया।

१८. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُبِكَ

مِنَ الْعِجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ

وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِالدَّيْنِ وَ قَهْرِالرِّجَالِ

एक एक बार। गम व अलम से बचे। अदाए करज़ के लिए गयारह बार पढे।

१९. يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ فَلَا تَكِلْنِيْ

اِلٰى نَفْسِيْ طُرْفَةَ عَيْنٍ وَّ اَصْلِحْ لِيْ شَانِيْ كُلَّهُ

एक एक बार। सब काम बनें।

२०. اَللّٰهُمَّ خِرْلِيْ وَاخْتَرْلِيْ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰٓى اِخْتِيَارِيْ

Scanned by CamScanner

सात सात बार। दिन रात के हर काम के लिए इसतेखारा है।

२१. **सैयिदुल इसतिग़फार** एक एक बार या ३ - ३ बार। गुनाह माफ हों और उस दिन रात मरे तो शहीद हो। वोह यह है:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ ط اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

फकीर इसके बाद इतना बढ़ाता है :

وَاغْفِرْلِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ -

और अपने जिस काम से कीसि नुकसान का अनदेशा होता है। मौला तआला म्हफुज़ रख़ता है।

२२. لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ ط

सौ सौ बार। दुनिया में (फाक़ा) भुका न रहे। कब्र में

Scanned by CamScanner

वह्शत (घभराहट) न हो। हश्र (क़यामत) में घभराहट न हो।

सिर्फ सुबह

१. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلاَّ بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

गयारह बार। हर काम बने शैतान से म्हफुज़ रहे।

२. सुरए इखलास गयारह बार। अगर शैतान अपने लशकर के साथ कोशिश करे कि उस से गुनाह कराए न करा सकें जब तक के यह खुद न करे।

३. يَا حَىُّ يَا قَيُّوْمُ لآ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ

इकतालीस (४१) बार। उसका दिल ज़िन्दा रहेगा और खातमा इमान पर होगा।

४. سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمْدِهٖ

तीन तीन बार। जुनुन, जुज़ाम, व बर्स व नाबीनाइ (अंधेपन) से बचे।

Scanned by CamScanner

५. **तिलावते क़ुरआने अज़ीम** कम से कम एक पारह कोशिश कर के सूरज निकलने से पहले पढ़े और अगर सूरज निकल आए तो ठहर जाए और ज़िक्र अज़कार करें, यहां तक के सूरज बुलंद हो जाए कि जिन तीन वक्तों में नामाज़ नाजाइज़ है तीलावत भी मकरुह है।

६. **दलाइलुल खैरात**, एक हिस्सा।

७. **शजरह शरीफ** - दलाइल व शजरह सूरज निकलने से पहले हों या फिर बाद में।

पाँचो नमाज़ों के बाद

१. **आयतुल कुर्सी** एक बार। मरते ही जन्नत में दाखिल हो।

२. اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ

Scanned by CamScanner

तीन तीन बार। गुनाह माफ हों। चाहे समंदर के झागों के बराबर हों।

३. **तसबिहे** हज़रत सैयिदतुना ज़हरा रदीयल्लाहु तआला अन्हा سُبْحٰنَ اللّٰهِ तैंतीस बार। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ तैंतीस बार। اَللّٰهُ اَكْبَرُ चौंतीस बार। आख़िर में।

لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَه‘ . لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ط

एक बार। उस दिन तमाम जहान में किसी का अमल उस के बराबर बुलन्द न किया जाएगा मगर जो उस के जैसा पढ़े।

४. माथे पर सीधा हाथ रख कर

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ .
اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّى الْهَمَّ وَالْحُزْنَ ط

हर ग़म व परेशानी से बचे, फक़ीर इसके बाद इतना बढ़ाता है : وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّةِ

Scanned by CamScanner

५. पंज गंज क़ादरीया : बरकात बे शुमार है।

नमाज़े सुबह व अ़सर के बाद

१. बगैर पाव बदले, बगैर बात किए दस दस बार

لآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لاَ شَرِيْكَ لَه‘ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ط

हर बला व आफत व शैतान व म्करूहात से बचे। गुनाह माफ हों, उसके बराबर किसी की नेकीयाँ न निकलें।

२. اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ ط

सात सात बार। दौज़ख दुआ करे कि इलाही इसे मुझ से बचा।

नमाज़े सुबह के बाद

१. اَللّٰهُمَّ اَكْفِنِىْ كُلَّ مُهِمٍّ مِّنْ حَيْثُ شِئْتَ وَمِنْ اَيْنَ

Scanned by CamScanner

شِئْتَ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدِيْنِيْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدُنْيَایَ
حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَا اَهَمَّنِيْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ بَغٰى عَلَیَّ
حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ حَسَدَنِيْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ کَادَنِيْ
بِسُوْٓءٍ حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ ج حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ
الْمَسَاءَ لَةِ فِي الْقَبْرِ ط حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ ج
حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ ج حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ط

एक एक बार या तीन तीन बार। हर मुशकिल आसान हो। सब परेशानिया दुर हों। ईमान सलामत रहे। अल्लाह तआला हर जगाह मदद फरमाए। दुशमन बरबाद हों। हासिद अपनी आग में जलें। नज़ाअ आसान हो। क़ब्र में ख़ुशहाल हों। नेकीयों का पल्ला भारी हो। सिरात पर आसानी हो।

२. बाद नमाज़े सुबह बगैर पाँव बदले बैठा हुआ ज़िक्रे इलाही में मशगुल रहे यहाँ तक कि सूरज बुलंद हो

Scanned by CamScanner

यानि सूरज के कीनारे को निकल कर बिस पच्चीस मिनट गुज़र जाएँ उस वक्त दो रकअत नमाज़ नफिल पढ़ो। पुरे हज व उमरह का सवाब ले कर पलटे।

नमाज़े मगरिब के बाद

फ़रज़ पढ़ कर छे रकअतें एक ही निय्यत से हर दो रकअत पर अत्तहीयात व दरुद व दुआ और पहली - तीसरी - पांचवी سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ से शुरु हो। उन में पहली दो सुन्नते मोक्किदा होंगी। बाकी चार नफल यह सलाते अव्वाबीन है, और अल्लाह अव्वाबीन के लिए ग़फूर है।

शब में

यानी सूरज के ढलने से सुबह सूरज निकलने तक जिस वक्त हो।

१. सूरह मुल्क - अज़ाबे क़ब्र से नजात है।

Scanned by CamScanner

२. सूरह यासीन - मग़फीरत है।

३. सूरह वाकिआ - फाक़ा से अमान है।

४. सूरह दुखान - सुबह इस हाल में उठे के सत्तर हज़ार फरिशते उस के लिए इसतग़फार करते हों।

बाद नमाज़े ईशा

१. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَآ اَمَرْتَنَآ اَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْهِ ط

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ ط

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ ط

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ ط

Scanned by CamScanner

ताक (१, ३, ५...) बार जितना बन सके हुसुले ज़ियारते अकदस صلّی اللہ علیہ و سلّم के लिए इस्से बेहतर सैग़ा नही मगर ख़ालिस ताज़ीमे शाने अक़दस के लिए पढ़े। इस निय्यत को भी जगाह न दे कि मुझे ज़ियारत अता हो। आगे उन का करम बेहद और बे इन्तेहा है।

मुंह मदीनए त्य्येबा की तरफ हो और दिल हुज़ुरे अक़दस صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ و اصحابہ وسلّم की तरफ हाथ बांध कर पढ़े। ये तसव्वुर बांधे कि रोज़ए अनवर के सामने मौजुद हुँ और यक़ीन जाने कि हुज़ुरे अनवर صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ و اصحابہ وسلّم उसे देख़ रहे है, उस्की आवाज़ सुन रहे हैं। उस्के दिल के हालात से वाक़िफ हैं।

२. اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ط اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ط اَللّٰہُ لَآاِلٰہَ اِلاَّ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۔ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ اَبَدًا

Scanned by CamScanner

عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُ اَللّٰهُ

اَللّٰهُ لَآاِلٰهَ اِلاَّاللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ

تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا غَوْثُ يَا غَوْثُ يَاغَوْثُ

सौ बार - गुनाहों की माफी हो। दुनिया और आख़िरत की आफतों से नजात मिले और दिल की सफ़ाई हो।

सोते वक्त

(१) **आयतुल कुर्सी** एक बार। जब तक सोता रहे अल्लाह की हिफाज़त में रहे। उस का घर और आस पास के घर चोरी से बचे रहे। आसेब व जिन का दख़ल न हो।

(२) **तसबीहे** हज़रते ज़हरा - सुबह निशात पर उठे और फाइदे बे शुमार है।

(३) **अल हम्द** और **क़ुल** एक एक बार

(४) सूरह **बक़रह** के शुरुं से مُفْلِحُوْنَ तक और

Scanned by CamScanner

आख़िर में اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से पढ़े। इन दोनों के बहुत फायदे है।

(५) اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا से आख़िर كهف तक चार आयातें रात में या सुबह जिस वक्त जागने की निय्यत से पढ़े आँख खुलेगी।(सुरए कहफ आंयत १०७)

(६) दोनो हाथ फैलाकर तीनों **क़ुल** एक एक बार पढ़कर उन पर दम करके सर, चहरा, सीना और आगे पीछे जहाँ तक हाथ पहुँचें पुरे बदन पर फेरले - फिर दुसरी बार - इसी तरह तीसरी बार भी करें। हर बला से म्हफुज़ रहे।

(७) सूरह قُلْ يَآ يُّهَاالْكٰفِرُوْنَ पर खातमा करे उस के बाद अगर बात करने की ज़रुरत हो तो बात करके फिर से पढ़ले कि ख़ातमा इसी पर होगा। इन्शा अल्लाह ताअला।

सोकर उठने पर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ۔

Scanned by CamScanner

क्यामत में भी इन्शा अल्लाह तअला, अल्लाह अज़ व जल की हमद ही करता उठे।

चेतावनी : उपर से यहां तक जितनी दुआएं लिखी गई है हर एक के अव्वल और आख़िर में दुरुद शरीफ ज़रुरी है।

तहज्जुद

फरज़ इशाअ पढ़ने के बाद कुच्छ देर सोजाए फिर रात में सूबह होने से पहले जिस वक्त आँख खुले अगरचे रात के नौ बजे हों या जाडों में जब पौने सात बजे इशा पढ़ कर सोजाए और सात सवा सात बजे आँख खुले वही वक्त तहज्जुद का है। वुज़ु करके कम से कम दो रकअत पढ़ले। तहज्जुद होगया और आठ रकअत पढ़ना सुन्नत है। और मामुल मशाइख १२ रकअत का इखतीयार है जो चाहे पढ़े और बहतर यह कि जितना कुरआन मजीद याद हो

Scanned by CamScanner

उस की तिलावत उन रकअतों में करे। पुरह कुरआन याद हो तो कम से कम तीन रात ज़्यादा से ज़्यादा चालीस रातों में ख्तम करे। न याद हो तो हर रकअत में तीन तीन बार सूरह इखलास पढ़े के जितनी रकअतें पढ़ेगा उतने खतमे कुरआन मजीद का सवाब मिलेगा।

ज़िक्रे जहर चहार ज़रबी

चार ज़ानो बैठे, बाएँ ज़ानो की रगे कीमास दाहीने पाउँ के अँगुठे और उसके बराबर की उँगली में दबाले फिर सर झुका कर बाएँ गुठने के सामने लाकर 'لا' का लाम यहां से शुरु करके दाहीने गुठने के सामने तक खींचता हुआ लेजाए। अब यहां से إلّا का हमज़ा शुरु करके लाम के बाद का अलिफ दाहीने शाने (कांधे) तक खींचता लेजाए और ० दाहीनी तरफ खुब मुंह फेरकर फिर वहां से إلّا

Scanned by CamScanner

اَللّٰهُ ताकत से दिल पर ज़रब करे। सौ बार या हस्बे कुव्वत कम से शुरु करे। फिर हस्बे ताकत व फुरसत बढ़ाता जाए। बहतर यह है कि पांच हज़ार ज़रब रोज़ाना तक पहुँचाए। जब हरारत (गरमी) बढ़ने लगे हर सौ (१००) बार के बाद एक या तीन बार مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَسَلَّمَ कहले तसकीन पाएगा। ऐसे वक्त और ऐसी जगाह हो कि रिया न आए। कीसी नमाज़ी ज़ाकिर या बीमार या सोते को तशवीश न हो अगर देखे कि रिया आता है तो न छोड़े और रिया के खयाल को दफा करे। अल्लाह अज़-व- जल की तरफ उस के नबी صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ و اصحابہ و سلّم के वसीले से रुजु (इलतिजा) लाए, तौबा करे। इन्शाअल्लाह रिया दुर होगा।

Scanned by CamScanner

ज़िक्रे ख़फी

दो ज़ानो आँख बन्द किए ज़बान को तालु से जमाए कि हरकत न करे महज़ तसव्वुर से कि साँस की आवाज़ भी न सुनाइ दे। इन पाँच तरीको से जो तरीका चाहे इखतीयार करे चाहे वक़्तन फवक़्तन पाँचों बरते।

(१) सर झुकाकर नाफ से لا का लाम निकाल कर सर धीरे धीरे ऊपर उठाता हुआ اِلٰه की ہ दिमाग़ तक लेजाए और फ़ौरन اِلَّا اللّٰه का पहला हमज़ा वहाँ से शुरु करके उसकी ज़रब नाफ या दिल पर करे।

(२) इसी तरह لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَط इस में दुसरा जुज़ اِلَّا هُوَ होगा।

(३) सिर्फ اِلَّا اللّٰهُ का पहला हमज़ा नाफ से उठाकर اِلَّا اَلْ दिमाग तक लेजाए और फौरन لَاهْ वहां से उतार कर नाफ़ या दिल पर ज़रब करे।

Scanned by CamScanner

(४) सिर्फ ہ اَللّٰہُ पहला हमज़ा नाफ से शुरू कर के لاؔ को दिमाग तक पहुँचाए और दसतुर के मुताबिक़ ہ की ज़रब करे।

(५) सिर्फ اللّٰہ ब सुकुन हा पहला हमज़ा नाफ से उठा कर लाम दिमाग़ तक, और ہلاؔ की ज़रब करे। इसे १०० सौ बार शुरु करके ह्सबे वुसअत हज़ारो तक पहुँचाए। इन पाँचो में अफज़ल पहला तरीक़ा है। यह तरीक़े इस दर्जे मुफ़ीद है कि इन्हें छुपाते हैं। इशारों में लिखते हैं। फक़ीर ने खास अपने बराद्राने तरीक़त के लिए इसे आम कीया।

पास अनफ़ास

इनहीं पांचों तरीकों में से जिसे चाहे हर साँस की आमद व रफ्त में खडे, बैठे, चलते, फिरते, वज़ु, बेवज़ु, बलकि कज़ाए हाजत (पेशाब पख़ाना)के वक्त भी धियान में रखे यहाँ तक कि इसकी आदत पड़जाए और तकल्लुफ (कोशिश)की हाजत न रहे।

Scanned by CamScanner

अब सोते में भी हर साँस के साथ ज़िक्र जारी रहेगा।

तसव्वुरे शैख़

तनहाई में आवाज़ों से दुर, चेहरा शैख़ के मकान कि तरफ और अगर विसाल होगया तो जिस तरफ मज़ारे शैख़ हो उधर मुतवज्जे होकर बैठे। महज़ खामोश, अदब के साथ, बकमाले खुशू और सुरते शैख़ का तसव्वुर करे और अपने आप को उसके हुज़ुर हाज़िर जाने और यह ख़याल जमाए कि सरकारे रिसाल्त अलैही अफज़लुस सालत वत्तहीयत से अनवार व फुयुज़ शैख के दिल पर .... फाइज़ हो रहे हैं। मेरा दिल क़ल्बे शैख के नीचे भीक मांगने के अंदाज़ में लगा हुआ है। उस में से अनवार व फुयुज़ उबल उबल कर मेरे दिल में आरहे हैं। इस तसव्वुर को बढ़ाए यहाँ तक कि जम जाए और तकलीफ की हाजत न रहें। इस की इनतहा पर शैख़ कि सुरत मुतमसिल (वेसि ही) हो कर मुरीद के

Scanned by CamScanner

साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और उस राह में जो मुशकिल उसे पेश आएगी उसका हल बताएगी।

चेतावनी : अज़कार व अशग़ाल में मशगुल होने से पहले अगर कज़ा नमाज़े या रोज़े हों उनका अदा करना जिस क़दर मुमकिन हो निहायत ज़रुरी है। जिस पर फर्ज़ बाकी हो उसके नफ़्ल व आमाले मुसतहबा काम नही देते बलकि क़बुल नही होते जब तक फर्ज़ अदा न करले।

चेतावनी : अज़कार व अशगाल के लिए तीन बदरक़ो की ज़रुरत है। तक़लीले तअ़ाम (कम खाना)तक़लीले कलाम (कम बोलना) तक़लीले मनाम (कम सोना) व बिल्लाहीत-तौफीक़ ।

फक़ीर अहमद रज़ा क़ादरी गफ़्रलहु।

पंजुम मुहर्रमुल हराम १३३८ हीजरी.

Scanned by CamScanner

दुआए अक़ीक़ा

पैदाइश से सातवें दिन अक़ीक़ा करना मसनुन है कि सर के बाल मुंडवाए जाए। उसी वक्त क़ुरबानी की जाए अगर लड़का होतो दो बकरे और लड़की होतो एक बकरी ज़बाह करे और अक़ीक़े से पहले नाम रख लिया जाए कि ज़बाह करने के वक़्त क़ुरबानी की दुआ में नाम की ज़रुरत होती है।

लड़के के अक़ीक़े की दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ ابْنِىْ .....

(यहाँ पर लड़के का नाम लिया जाए।)

دَمُهَا بِدَمِهٖ وَ لَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَشَحْمُهَا بِشَحْمِهٖ وَ
عَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَ جِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَ شَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ
اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَآءً لِاِبْنِىْ مِنَ النَّارِ وَ تَقَبَّلْهَا مِنْهُ كَمَا

Scanned by CamScanner

تَقَبَّلْتَهَا مِنْ نَبِيِّكَ الْمُصْطَفٰى وَ حَبِيْبِكَ اَحْمَدَ الْمُجْتَبٰى
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُکِیْ وَ
مَحْيَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ط لاَ شَرِيْكَ لَهٗ وَ
بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ط بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ
اَكْبَرُ ٥

लड़की के अक़ीक़े की दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ بِنْتِیْ .....

(यहाँ पर लड़की का नाम लिया जाए।)

دَمُهَا بِدَمِهَا وَ لَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَ شَحْمُهَا بِشَحْمِهَا
وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَ جِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا
بِشَعْرِهَا۔ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَآءً لِبِنْتِیْ مِنَ النَّارِ وَ

Scanned by CamScanner

تَقَبَّلْهَا مِنْهَا كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ نَّبِيِّكَ الْمُصْطَفٰے وَحَبِيْبِكَ

اَحْمَدَ الْمُجْتَبٰى صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. اِنَّ

صَلَاتِىْ وَ نُسُكِىْ وَ مَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ

الْعَالَمِيْنَ ط لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَ اَنَامِنَ

الْمُسْلِمِيْنَ ط بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ٥

जब शुरु से आख़िर तक यह दुआ पढ़ चुके और बिसमिल्लाह अल्लाहु अकबर पर पहुंचे तो उसि वक़्त ज़बह करदे और ज़बह के बाद बच्चे के सर पर उस्तरा चले।

सुन्नी मुसलमानो के दीन व दुनिया का भला

ला ज़वाल दौलत और बहुत आसान

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

Scanned by CamScanner

وَسَلِّمْ ط صَلَاةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط

बाद नमाज़े जुमाअ अ़वाम के साथ मदीने तय्यबा की तरफ मुँह करके हाथ बांध कर खड़े होकर (१००) सौ बार पढ़ें। जहाँ जुमाअ न होता हो वहाँ जुमाअ के दिन नमाज़े सुबह चाहे तो ज़ोहर या असर के बाद पढ़ें। जो कहीं अकेला हो तनहा पढ़े। यूँही औरतें अपने अपने घरों में पढ़े।

इस के चालीस फायदे है जो सही और मुअत्बर हदीसों से साबित हैं। यहाँ नमुने के लिए चंद ज़िक्र कीये जाते हैं। जो कोई रसुलुल्लाह صلّی اللہ تعالیٰ علیه وعلیٰ آله و اصحابه و سلّم से मुहब्बत रखेगा, जो उनकी अज़मत तमाम जहान से ज़यादा दिल में रखेगा, जो उन की शान घटाने वालों से उनके ज़िक्रे पाक मीटाने वालों से दुर रहेगा, दिल से बेज़ार होगा। ऐसा जा कोइ मुसलमान इसे पढ़ेगा उसके लिए बेशुमार फायदे हैं जिन में से बाज़ दर्ज कीए जाते है :

Scanned by CamScanner

(१) इस के पढ़ने वाले पर अल्लाह तआ़ाला तीन हज़ार रहमतें उतारेगा।

(२) उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजेगा।

(३) पाँच हज़ार नेकिय़ा उसके नामए आमाल में लिखेगा।

(४) उसके पाँच हज़ार गुनाह माफ फरमाएगा।

(५) उसके पाँच हज़ार दरजे बुलंद करेगा।

(६) उसके माथे पर लिखदेगा कि यह मुनाफिक़ नही।

(७) उसके माथे पर लिखदेगा कि यह दौज़ख से आज़ाद है।

(८) अल्लाह उसे कयामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।

(९) उसके माल में तरक़्क़ी देगा।

(१०) उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत रखेगा।

(११) दुशमनों पर ग़लबा देगा।

(१२) दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा।

Scanned by CamScanner

(१३) किसी दिन ख़्वाब में ज़्यारते अकदस ﷺ की बरकत से बख़्शा जाएगा।

(१४) इमान पर ख़ातमा होगा।

(१५) क्यामत में रसुलुल्लाह صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ و اصحابہ و سلّم उस से मुसाफ़ाह करेंगे।

(१६) रसुलुल्लाह صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ و اصحابہ و سلّم की शफ़ाअत उसके लिए वाजिब होगी।

(१७) अल्लाह अज़-व-जल उस से ऐसा राज़ी होगा कि कभी नाराज़ न होगा, और बड़ी खुबी की बात यह है कि आला हज़रत रदीयल्लाहो अंहो ने इस दरुद शरीफ की तमाम सुन्नियों के लिए इजाज़त फरमाइ है इसके साथ शर्त यह है कि बद मज़हबों से बचे। फक्त।

Scanned by CamScanner

कामयाबी हर मक़सद और हुस्ले ग़लबा व ज़फर के लिए

चंद बेहतरीन और तीर बहदफ दुआएँ

नमाज़े पंजगाना के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ते रहो। रात को सोते वक्त ब नीय्यत हिसार (हिफ़ाज़त के लिए दायरा बनाना) बिसल्लिाह शरीफ رَحِيُم के मीम को लामें اَلْحَمْدُ से मीलाते हुए पुरी सूरह फातेहा एक बार, आयतुल कुर्सी शरीफ एक बार। चार क़ुल एक एक बार सूरह इखलास के बग़ैर, कि सूरह इखलास तीन बार अव्वल व आख़िर दरुद शरीफ तीन तीन बार बिसमिल्लाह पढ़ कर सोने को लेट जाएं। बाद नमाज़े फजर सूरज निकलने से पहले और बाद मगरीब ....

حَسْبِیَ اللّٰهُ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ط दस बार।

Scanned by CamScanner

رَبِّ اِنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰاحِمِیْنَ ط

दस बार।

رَبِّ اِنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ   दस बार।

سَیُهْزَمُ الْجَمْعُ وَ یُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ   दस बार।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَ نَعُوْذُبِكَ مِنْ

شُرُوْرِهِمْ   दस बार।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَاَ یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ

وَلَاَ فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ   तीन बार।

رَبَّنَا لَاَ تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَ لَاَ تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ

ذٰلِكَ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ   तीन बार।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ وَلَاَ قُوَّةَ اِلَاَّ بِاللّٰهِ مَا شَآءَ اللّٰهُ

Scanned by CamScanner

كَانَ وَ مَالَمْ يَشَآءُ لَمْ يَكُنْ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

شَىْءٍ قَدِيْرٌ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْماً

तीन बार

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ तीन बार।

يَاحَا فِظُ يَا حَفِيْظُ يَا رَقِيْبُ يَا وَكِيْلُ يَاسَلٰمُ يَا

كَبِيْرُ يَا مُحِيْطُ तीन बार

اِنَّ رَبِّى عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَفِيْظٌ ٥ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظاً وَّ

هُوَاَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ بِالْكٰفِرِيْنَ ٥ وَاللّٰهُ

مِنْ وَّرَآءِ هِمْ مُّحِيْطٌ بَلْ هُوَقُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ فِىْ لَوْحٍ

مَّحْفُوْظٍ - तीन बार

وَ الشَّمسَ وَالْقَمَرَ وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرَاتٍ م بِاَمْرِهٖ اَلاَ

Scanned by CamScanner

لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ

तिन बार।

अपनी और सब मुसलमानों की हीफाज़त की निय्यत करें। सौ (१००) बार सूरह फातेहा कीसी भी वक्त सूबह या शाम मुक़र्रर करके बिसमिल्लाह शरीफ के ऱहीम की मीम को लामे अलह्मद से मीलाते हुए या युँ कररें कि बाद नमाज़े फजर ३० बार बाद नमाज़े ज़ोहर २५ (पच्चीस) बार, बाद नमाज़े असर २० (बिस) बार, बाद नमाज़े मग़रिब ५ बार, बाद नमाज़े इशा १० बार जब पढ़े तो अपने मकसद में क़ामयाबी की दुआ भी करें। जीनहें फुरसत न हो वह हर नमाज़ के बाद सात सात बार ही पढ कर दुआ करें। इतनी भी मोहलत न पाए तो सूबह व शाम सात सात बार पढ लिया करें। कुनुते नाज़ीलह قنوت نازلہ फजर की दुसरी रकअत में रुक़ू से पहले इमाम व मुक़तदी जिनहें याद हो सब आहिसता वीत्र की तरह

Scanned by CamScanner

पढ़ा करें। दुआए मासुरह اَللّٰهُمَّ اِنَّانَسْتَعِيْنُكَ पढ़ कर اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ के बाद यह दुआ पढ़ा करें।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ وَ الْمُعَافَاةَ الدَّآئِمَةَ لِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ فِىْ الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ الْمُسْلِمِيْنَ وَ الْمُسْلِمَاتِ وَ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَ اَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِهِمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ كَفَرَةَ الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَ يُقَاتِلُوْنَ اَوْلِيَآءَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَ زَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ وَ اَنْزِلْ عَلَيْهِمْ بَأْسَكَ الَّذِىْ لَاَ يُرَدُّ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ شَتِّتْ شَمْلَهُمْ وَ فَرِّقْ جَمْعَهُمْ وَ دَمِّرْ دِيَارَهُمْ وَ قَصِّرْ اَعْمَارَهُمْ وَ خَرِّبْ بُنْيَانَهُمْ وَ افْسِدْ تَدَابِيْرَهُمْ

Scanned by CamScanner

وَاجْعَلْ بَاْسَ بَعْضِهِمْ عَلٰى بَعْضٍ وَ مَزِّقْهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ اَللّٰهُمَّ يَا مُنْتَقِمُ اِنْتَقِمْ مِنْهُمْ عَاجِلاً يَا مُذِلُّ كُلِّ جَبَّارٍ وَّ عَنِيْدٍ بِقَهْرِ عَزِيْزِ سُلْطٰنِهٖ يَا مُذِلُّ يَا قَاهِرُ ذَا الْبَطْشِ الشَّدِيْدِ اَنْتَ الَّذِىْ لَا يُطَاقُ اِنْتِقَامُهٗ يَا قَاهِرُ۔

जिनहें दुआए اَللّٰهُمَّ اهْدِنِىْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ الخ याद हो यह भी पढ़ा करें। वक्ते नमाज़ का भी खयाल रखें कि कहीं ज़यादा पढ़ने में देर न होजाए और सुरज निकल आए। बहुत अव्वल वक्त से नमाज़ शुरु किया करें अगर कीसी रोज़ देर होजाए तो दुआए मासुरा (अल्लाहुम्मा इन्ना नस तइनुका) اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ।। पढ़ कर रुकु कर लिया करें जो साहब यह अमल कर सकें यह भी करें। बारह रकअत नफ़ल दो दो करके रात में या दिन में पढ़ें। दो रकअत आख़िर में सलाम से पहले सजदे में सूरह फातेहा सात बार, आयतुल कुर्सी सात बार।

Scanned by CamScanner

لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَہٗ لاَ شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ

الْحَمْدُ يُحْيِى وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ حَىٌّ لاَّ يَمُوْتُ بِيَدِهِ

الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ दस बार फिर اَللّٰهُمَّ

اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَ مُنْتَهِىَ

الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَبِاِسْمِكَ الْاَعْظَمِ وَ كَلِمٰتِكَ

التَّامَّاتِ اَنْ تَقْضِىَ حَاجَتِىْ

(यहां पहुँच कर अपनी हाजत व मक़सद का ख़याल करें)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ एक बार

وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ

ذَاتَ بَيْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰى عَدُوِّكَ وَعَدُوِّهِمْ اَللّٰهُمَّ

الْعَنْ كَفَرَةَ الْكِتٰبِ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ

Scanned by CamScanner

اَوْلِيَآئِكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ

وَاَنْزِلَ عَلَيْهِمْ بَأْ سَكَ الَّذِىْ لاَ يُرَدُّ عَنِ الْقَوْمِ

الْمُجْرِمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ انْصُرِ الْاِسْلاَمَ وَالْمُسْلِمِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ

اَعِزِّالْاِيْمَانَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ. اَللّٰهُمَّ اَذِلِّ الْكُفْرَ وَالْكَافِرِيْنَ

وَاخْذُلِ الشِّرْكَ وَالْمُشْرِكِيْنَ. اَللّٰهُمَّ شَتِّتْ شَمْلَهُمْ وَ

فَرِّقْ جَمْعَهُمْ وَ قَصِّرْ اَعْمَارَهُمْ وَ خَرِّبْ بُنْيَانَهُمْ وَ

اَفْسِدْ تَدَابِيْرَهُمْ وَمَزِّقْهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ يَا قَاهِرُ

ذَا الْبَطْشِ الشَّدِيْدِ اَنْتَ الَّذِىْ لاَ يُطَاقُ اِنْتِقَامُهٗ يَا

قَاهِرُ يَا قَاهِرُ بِشِدَّةِ قَهْرِهٖ وَقُوَّتِهٖ وَ بَطْشِهٖ عَلَى

الطُّغَاةِ الظّٰلِمِيْنَ الْجَبَّارِيْنَ وَالْمُتَكَبِّرِيْنَ الْمُتَمَرِّدِيْنَ

يَا شَدِيْدَ الْبَطْشِ يَا عَظِيْمَ الْقَهْرِ يَا مُنْتَقِمُ مِنْ كُلِّ ذِىْ

سَطْوَةٍ مَّكِيْنٍ يَا مُذِلُّ كُلِّ جَبَّارٍ وَّ عَنِيْدٍ بِقَهْرٍ عَزِيْزٍ

Scanned by CamScanner

سُلْطَانِهٖ يَا مُذِلُّ اَيِّدْنَا بِنَصْرٍ مِّنْكَ وَفَتْحٍ مُّبِيْنٍ حَتّٰے
نَقْهَرَ اَعْدَآءَ نَا اَجْمَعِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ لاَ تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لاَّ
يَرْحَمُنَا وَكُفَّ اَيْدِ الظّٰلِمِيْنَ عَنَّا وَاجْعَلْ بَأْسَ
بَعْضِهِمْ عَلٰى بَعْضٍ وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ
وَاحْفِظْنَا عَنْ شُرُوْرِ الْمُفْسِدِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ اقْذِفِ
الرُّعْبَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ وَ لاَتَجْعَلْ لَّهُمْ عَلَيْنَا سَبِيْلاً رَّبَّنَا
اطْمِسْ عَلٰى وُجُوْهِ اَعْدَآءِ نَا وَامْسَخْهُمْ عَلٰى
مَكَانَتِهِمْ فَلاَ يَسْتَطِيْعُوْنَ مُضِيًّا وَّلاَ يَرْجِعُوْنَ -

फक़िर मुस्तुफ़ा रज़ा खान क़ादरी नुरी रज़वी बरेलवी

दुरुदे पंज गंज क़ादरी

يَا عَزِيْزُ صَلِّ وَ سَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلَى النَّبِيِّ الْعَزِيْزِ

Scanned by CamScanner

الْمُعِزِّ الْاَعِزِّ وَ عَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحٰبِهِ الْمُعَزِّزِيْنَ اَللّٰهُمَّ

عَزِّزْنِىْ بِالْاِيْمَانِ وَ حُسْنِ الْعَمَلِ وَالْعَافِيَةِ الدَّآئِمَةِ وَ

حُسْنِ الْعَاقِبَةِ فِى الْاُمُوْرِ كُلِّهَا وَهَبْ لَنَا ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً

اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاءِ ط اَللّٰهُ رَبِّىْ لَاشَرِيْكَ لَه' ٥

सात सौ चौरासी बार, इज़्ज़त, ग़लबा, फतेहयाबी और दुशमनो पर कामयाबी के लिए।

يَا كَرِيْمُ صَلِّ عَلَے النَّبِىِّ الْكَرِيْمِ مَعْدِنِ الْجُوْدِمِ

وَالْكَرَمِ وَاٰلِهِ الْكِرَامِ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ وَ عَبْدِهِ الْمُكَرَّمِ

وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اَللّٰهُمَّ اَكْرِمْ عَلَيْنَا بِكَرَمِكَ الْعَظِيْمِ ط

(१००)सौ मरतबा बाद नमाज़े ज़ौहर बराए कसरते रिज़्क़ व मनफअते अज़िम दीन व दुनिया व क़ज़ाए हाजत।

يَا جَبَّارُصَلِّ عَلٰے سَيِّدِالْقَاهِرِيْنَ قَاتِلِ الْمُشْرِكِيْنَ

Scanned by CamScanner

دَافِعِ الْحَاسِدِيْنَ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ۔ اَللّٰهُمَّ اقْهَرْ عَلٰے اَعْدَآئِنَا بِقَهْرِكَ الْعَظِيْمِ يَا قَهَّارُ ط

(१००)सौ मरतबा बाद नमाज़े अ़सर दुशमनों की हलाकत व तबाही और नुक़सान से बचने के लिए।

يَا سَتَّارُ صَلِّ عَلٰى سِتْرِكَ الْجَمِيْلِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ۔ اَللّٰهُمَّ اسْتُرْنَا بِسِتْرِكَ الْجَمِيْلِ فَلَمْ اَزَلْ بِسِتْرِكَ الْجَمِيْلِ الْمُزَّمِّلِ الْمُدَّثِّرِ مَسْتُوْرًا مُّزَّمِّلاً مُدَّثِّرًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۔

(१००)सौ मरतबा बाद नमाज़े मग़रिब

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ.. ४५० बार। हिफाज़ते हर बला व आफत।

يَا غَفَّارُ صَلِّ عَلٰى شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ

Scanned by CamScanner

وَالْمُؤْمِنَاتِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

(१००)सौ मरतबा बाद नमाज़े इशा। मग़फिरत व हिफाज़ते जान व माल व खैर व बरकत व कज़ाए हाजात के लिए।

दुरुदे फज़ले अज़िम १०० बार रोज़ान

یَا ذَالْفَضْلِ الْعَظِیْمِ صَلِّ عَلٰی فَضْلِکَ عَظِیْمٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ تَفَضَّلْ عَلَیْنَا بِفَضْلِکَ الْعَظِیْمِ۔

हुस्ले फज़ले अज़िम, ज़यादा मुनाफा व कसरते माल व दौलते दीन व दुनिया व दुशमनों से हिफाज़त खुसुसीयत व निसबत व विलायत।

दुरुदे रहमत یَارَحْمٰنُ یَا رَحِیْمُ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِکْ عَلٰی رَحْمَةٍ لِّلْعٰلَمِیْنَ رَاحَةِ الْمُؤْمِنِیْنَا الرَّؤُفِ

Scanned by CamScanner

الرَّحِيْمِ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَاَوْلِيَآئِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَ عَلَيْنَا
مَعَهُمْ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

१०० बार रोज़ाना

(رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ
وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ٥) رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ
الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ٥ رَبِّ
اَعُوْذُبِكَ بِكَلِمَاتِ اللّٰه التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ٥
سَلَامٌ عَلٰے اِبْرَاهِيْمَ٥ سَلَامٌ عَلٰے مُوْسٰى وَ هَارُوْنَ
٥ سَلَامٌ عَلٰى اِلْيَاسِيْنَ ٥ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ٥
سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ٥ سَلَامٌ قَوْلاً مِّنْ
رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ٥ سَلَامٌ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ بِحُرْمَةِ
الٓمّٓ الٓمّٓصٓ-كٓهٰيٰعٓصٓ- طٰسٓمّٓ- طٰسٓ- حٰمٓ- عٓسٓقٓ-
حٰمٓ - نٓ - يٰسٓ- طٰهٰ - قٓ - الٓمّٓرٰ يَا رِجَالَ الْغَيْبِ ٥ يَا
شَيْخُ عَبْدُالْقَادِرْ جِيْلَانِىْ شَيْئًا لِلّٰهِ-

Scanned by CamScanner



आप सुन्नी हैं और
इमाम अहमद रज़ा को नही जानते?
तअज्जुब है !!!

Scanned by CamScanner